SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय राजनीति का विकास और सोशल मीडिया

सीतू शुक्ला, राजनीति विज्ञान विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सीतू शुक्ला

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/02/2024
Overall Similarity : 05% on 19/02/2024

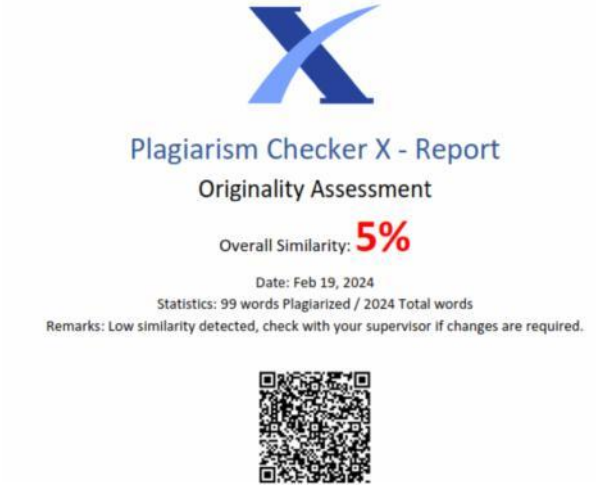

शोध सार

आज के आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में मनुष्य ने जितनी प्रगति की है उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सूचना तकनीकी, संचार, सोशल मीडिया के साधनों में निरंतर होती प्रगति हमारे जीवन, समाज, देश और विश्व स्तर पर निश्चय ही प्रभावशाली प्रभाव डालती है। आज टेलीफोन, टैलेक्स, फैक्स, ईमेल, नेट, ट्यूटर, व्हाट्सएप ,इंस्टाग्राम नवीनतम माध्यमों का तीव्र विकास हो रहा है। जहां संदेश या सूचना पहुंचने में महीनों लगते थे, वही आज यह समय दिनों दिन काम ही होता जा रहा है और यह समय सेकेंडों में आ गया है। भारत जनसंख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़ दिया है और अब भारत दुनिया में दूसरे सबसे अधिक सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के साथ सबसे अधिक आबादी वाला देश है। जानकारी प्राप्त करने हेतु सोशल मीडिया हर किसी के दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनता जा रहा है। इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में समाचार पत्रों की जगह धीरे–धीरे सोशल मीडिया ने ले ली है, क्योंकि यह गतिशीलता के साथ आसानी से प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध है। सोशल मीडिया वास्तविक दुनिया का दर्पण बनता जा रहा है। निःसंदेह सोशल मीडिया केवल मनोरंजन तक ही सीमित नहीं है बल्कि सोशल मीडिया ने राजनीति में भी अपनी महत्वपूर्ण जगह बना ली है। बड़े परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए सरकार को डिजिटल रूप में सशक्त समाज में बदलने की दृष्टि से डिजिटल इंडिया लेकर आई और ऐसा देखा जा सकता है पीएम मुफ्त स्मार्टफोन जैसी विभिन्न योजनाएं डिजिटलीकरण के महत्व को बढ़ाते जा रहे हैं। जनमत लोकतंत्र का आधार है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म सार्वजनिक चर्चा,जनमत जुटाने और राजनीतिक संवाद के लिए एक नया और महत्वपूर्ण स्थान बनता जा रहा है। किशोर सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की वृद्धि के साथ राजनीतिक दल में नए मतदाताओं की संख्या तेजी से

बढ़ रही है। जैसे–जैसे चुनाव नजदीक आते हैं राजनीतिक दल अभियानों के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का ही उपयोग करते हैं। कोविड 19 की बात करें तो उस समय क्वॉरेंटाइन व्यक्ति सोशल मीडिया के माध्यम से ही बाहरी लोगों, समाज, राजनीति, से जुड़ा रहा और इस तरह सरकार द्वारा किए गए निरंतर प्रयासों के साथ सोशल मीडिया प्रभावी रुप से टीकाकरण जागरूकता और अन्य उपायों को बढ़ावा देने में भी प्रथम रहा। प्रस्तुत शोध पत्र मुख्य रूप से राजनीति में सोशल मीडिया के प्रभाव पर केंद्रित है जिसके अंतर्गत शोधकर्ता इसकी भूमिका, महत्व, दुष्प्रभावों, और भ्रामक सूचना हेतु सजग प्रयासों को शामिल करता है।

मुख्य शब्द

सोशल मीडिया, डिजिटलीकरण, डिजिटल इंडिया, भारतीय राजनीति, वैश्विक राजनीति.

प्रस्तावना

लोकतंत्र में लोगों के लिए सूचनाओं की अधिक से अधिक और सही जानकारी बहुत जरूरी है, क्योंकि इन्हीं सूचनाओं के आधार पर वे अपने राजनीतिक निर्णय लेते हैं। इस दृष्टि से आज लोगों के पास सूचनाओं को हासिल करने के इतने विकल्प मौजूद हैं जितने इससे पहले कभी नहीं थे। यदि आपके पास इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है तो आप दुनिया के किसी भी भाषा में, किसी भी देश किसी भी घटना के बारे में समाचार तत्काल प्राप्त कर सकते हैं। यहां तक कि आप अपने मोबाइल फोन पर भी समाचार प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न सोशल मीडिया विकल्पों के बावजूद क्या यह दावा किया जा सकता है कि लोगों को सही सूचनाओं मिल पा रही हैं? क्या जनता सही निर्णय लेने में सक्षम बना रही है?[1]

लोकतंत्र में निश्चय ही जनता को अपनी मर्जी की सरकार चुनने का पूरा अधिकार है। लेकिन जनता किन परिस्थितियों में और किन आधारों पर अपना निर्णय लेने के लिए प्रेरित की जा रही है, यह जानना भी लोकतंत्र की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। जिन पार्टियों और जिन उम्मीदवारों में से लोग अपने प्रतिनिधियों का चयन करते हैं क्या वह उनके बारे में सभी बातें सही–सही जा पाते हैं? लोकतंत्र में लोगों के जानने के इस अधिकार का बड़ा ही महत्व है और इसे पूरा करने का माध्यम सोशल मीडिया के विभिन्न साधन है। सोशल मीडिया के विभिन्न विकल्प इस बात का भ्रम पैदा करने में कामयाब होते हैं कि दुनिया भर की सूचनाओं आपके ड्राइंग रूम में मौजूद है लेकिन इन सूचनाओं से कितना ज्ञान बढ़ रहा है और कितना आज्ञा इसे भी जांचने की आवश्यकता है।[2]

लोकतंत्र में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के साथ मीडिया भी लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। भारतीय राजनीति के तीन स्तंभों सरकार, जनता व मीडिया से हम भली–भांति परिचित हैं, किंतु अब एक और स्तंभ जुड़ा, वह है, सोशल मीडिया। आज लोकतंत्र के साथ–साथ सोशल मीडिया के विभिन्न साधन में मजबूत हो रहे है। आज नेताओं का कोई भी भाषण या रैली फेसबुक, ट्विटर इंस्टाग्राम के के जिक्र के बगैर समाप्त नहीं होता है। सरकार के ज्यादातर अभियान सोशल मीडिया के रास्ते ही जमीन पर उतरते हैं। यह सब बातें इसका पर्याय है कि राजनीतिक द्वंद्व और वर्चस्व की लड़ाई केवल जमीन पर ही नहीं बल्कि इंटरनेट की दुनिया में भी जारी है। बीते वर्ष के लोकसभा चुनाव में सोशल मीडिया की ताकत को सभी ने देखा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विजय में सबसे बड़ी भूमिका निभाई भूमिका युवाओं ने निभाई और उनके विचारों को युवाओं तक पहुंचाने का सबसे बड़ा कम सोशल मीडिया के विभिन्न विकल्पों के द्वारा किया गया हैं।[3]

सोशल मीडिया आज केवल दोस्तों और परिवार से जुड़ने का एक साधन मात्र नहीं हैं, बल्कि यह राजनीतिक गतिविधियों के लिए एक प्रभावशाली स्थान बनता जा रहा हैं और एक नया राजनीतिक संवाद तैयार हो रहा है।

सोशल मीडिया का विकास और भारतीय राजनीति को लाभः

1. जनता में जागरूकता लाना, ऐतिहासिक रूप से लोग कभी भी सरकारी नीतियों के बारे में इतने जागरूक नहीं थे जितने कि अब हो रहे हैं।

2. लोगों के बीच जागरूकता फैलाने में, विभिन्न सोशल मीडिया अभियानों के माध्यम से सरकार की पहुंच बढ़ रही है।
3. सोशल मीडिया कोविड महामारी के समय जनता में जागरूकता को बढ़ावा देने और दवाओं के लिए साधन उपलब्ध कराने में अपनी प्रभावशाली भूमिका अदा की है।
4. संचार बाधाएं जो लोगों को नेताओं के साथ बातचीत करने की अनुमति नहीं होती थी, अब सोशल मीडिया के विभिन्न विकल्पों के माध्यम से बहुत आसान हो गई है।
5. राजनेता सोशल मीडिया के माध्यम से ही अपने समर्थकों तक पहुंच बना रहे हैं। वे सोशल मीडिया पर अपनी गतिविधियों और पोस्ट के माध्यम से जनता को जागरूक रखना सुनिश्चित कर रहे हैं। इससे आम जनमानस के लिए राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने की क्षमता में वृद्धि हो रही है।
6. एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भारत और उसके मित्र देशों के मध्य राजनीतिक संबंधों को प्रगाढ़ करने में सोशल मीडिया ने अपने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

सोशल मीडिया के राजनीतिकरण होने से नकारात्मक प्रभावः

1. राजनीतिक ध्रुवीकरण सोशल मीडिया की सबसे आम आलोचनाओं में से एक है। जहां लोग केवल वही दृष्टिकोण देखते जिससे वे सहमत होते है।
2. यह अभियान कभी–कभी देश के विभिन्न हिस्सों में धार्मिक और सामाजिक तनाव फैलाने में सफल हो जाते हैं।
3. सोशल मीडिया ने लोकलुभावन राजनीति की शैली को सक्षम किया है, जो नकारात्मक पक्ष पर नफरत फैलाने वाले भाषण और अतिवादी भाषण को डिजिटल स्थानों में पनपने की अनुमति देते हैं, जो कि अनियमित है।
4. प्रोपेगेंडा सेटिंग, गूगल ट्रांसपेरेंसी रिपोर्ट के तहत पिछले दो सालों में ज्यादातर राजनीतिक पार्टियों ने चुनावी विज्ञापनों पर करीब 800 मिलीयन डॉलर (5,900 करोड़ रू.) व्यर्थ किए हैं।
5. राजनीतिक रणनीति सोशल मीडिया की मदद से राजनीतिक दल मतदाताओं की पसंद और नापसंद के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम हो जा रहे हैं और उन्हें आगे बढ़ाने में सफल हो रहे हैं, विशेष तौर पर स्विंग वोटर्स जिनके विचारों को, जानकारी में हेरफेर करके बदला जा सकता है।
6. सोशल मीडिया ने लोगों को बेहतर जानकारी दी है लेकिन हेरफेर करना और भी आसान कर दिया है इसीलिए कोई भी कभी भी कहीं पर भी इसका उपयोग गलत अफवाहे और गलत सूचनाओं को फैलाने में करता रहता हैं।[4]

भारत ने जनसंख्या के मामले में चीन को पीछे छोड़ दिया है और अब भारत दुनिया में दूसरे सबसे अधिक सोशल मीडिया का उपयोगकर्ताओं के साथ सबसे अधिक आबादी वाला देश है। जानकारी प्राप्त करने के लिए सोशल मीडिया हर किसी के दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है इसीलिए भाग दौड़ भरी जिंदगी में समाचार पत्रों की जगह धीरे–धीरे सोशल मीडिया लेता जा रहा है, क्योंकि यह गतिशीलता के साथ–साथ आसानी से उपलब्ध भी है। सोशल मीडिया वास्तविक दुनिया का दर्पण बनता जा रहा है। निःसंदेह सोशल मीडिया केवल मनोरंजन तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमे राजनीति को भी जगह मिल गई है। बड़े परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज में बदलने की दृष्टि से डिजिटल इंडिया लेकर आई और ऐसा माना जा सकता है कि पीएम मुफ्त स्मार्टफोन जैसी विभिन्न योजनाओं के साथ डिजिटलीकारण का महत्व बढ़ता जा रहा है। भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी का भी यही कहना है कि मैं डिजिटल इंडिया का सपना देखता हूं जहां सरकार सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ती है।

किशोर सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की वृद्धि के साथ सोशल मीडिया के आगमन के बाद, राजनीतिक दल वस्तुतः नए मतदाताओं (18 से 19 वर्ष) से जुड़े हुए हैं। जैसे–जैसे चुनाव नजदीक आते हैं, राजनीतिक दल अभियानों

के लिए विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं जो मतदाताओं को बयानबाजी और चुनावी विज्ञापनों के साथ लुभाने में सहायक होते हैं क्योंकि सोशल मीडिया राजनेताओं को उनके दृष्टिकोण जानने और उपयोगकर्ताओं को हेरफेर करने में आसान बनाता है।

कोविड 19 की बात करें तो उस समय क्वॉरेंटाइन व्यक्ति सोशल मीडिया के माध्यम से ही बाहरी लोगों, समाज, राजनीति, से जुड़ा रहा और इस तरह सरकार द्वारा किए गए निरंतर प्रयासों के साथ सोशल मीडिया प्रभावी रुप से टीकाकरण जागरूकता और अन्य उपायों को बढ़ावा देने में भी प्रथम रहा।

दुर्भाग्य से सोशल मीडिया भारतीय राजनीति में विवाद की जड़ बन गया है। हाल ही में ट्विटर, फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम पर नफरत फैलाने वाले भाषण और फर्जी खबरों के परिणाम स्वरूप गहराते राजनीतिक ध्रुवीकरण को देखा जा सकता है जो धार्मिक और सामाजिक तनाव को जगह दे रहा है। हालांकि हम जो देखते हैं उसी पर विश्वास करते हैं और सामग्री के स्वरलूप में उपलब्ध है, इसीलिए हमें सही जानकारी और तथ्यों से परिचित हुए बिना विश्वास करना पड़ता है और यह हमें सच्चाई से दूर ले जाता है जो नफरत की वजह बनता है। हाल ही में हुए हरियाणा दंगे और दिल्ली देंगे 2019 जैसे मामलों में सोशल मीडिया की एक डरावनी तस्वीर पेश की है और अभी भी हमें परेशान करती रहती है और समकालीन भारतीय राजनीति में सोशल मीडिया के अंधेरे पक्ष की याद दिलाती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

हालांकि सोशल मीडिया महज एक उपकरण है जिसका उपयोग व्यक्तिगत हित पूरा करने के लिए किया जाता है। दुख की बात है कि इसके दुरुपयोग से समाज में हिंसा और ध्रुवीकरण होता है इसके अंधेरे पक्ष और गंभीर मुद्दों को नजरअंदाज किए बिना इसे कमजोर करने के साथ–साथ खत्म करने के पक्षपात के बिना जमीनी स्तर पर इसके क्रियान्वयन के लिए जोरदार कदम उठाने की जरूरत है। कानून के अस्तित्व के बावजूद राजनीतिक दल के कार्यकर्ताओं द्वारा बार–बार भड़काऊ सामग्री प्रसारित की जाती है क्योंकि यह उन व्यक्तियों के खिलाफ सख्त और कठोर कार्रवाई की अनुपस्थित या कमी को दर्शाता है जो अफवाह फैलाने के लिए पूरी तरह जिम्मेदार हैं। इसका युवाओं पर बेहद नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और भी इसके बहकावे में आकर हिंसा को अंजाम देने के लिए भी जिम्मेदार होते हैं इसीलिए नागरिकों में जागरूकता पैदा करने की जरूरत है और ऑनलाइन भड़काऊ सामग्री से भी दूर रहने की भी आवश्यकता है साथ ही ऐसी समस्याओं से निपटने के लिए एक स्वतंत्र संस्था होनी चाहिए जो ऐसी गतिविधियों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई कर सके, ताकि समाज को नफरत से छुटकारा मिल सके और भाईचारे के बजाय ईर्ष्या की भावना को खत्म किया जा सके। सोशल मीडिया महज एक उपकरण है सूचनाओं प्राप्त करने का, इसको उपकरण ही रहने दिया जाए तभी यह समाज, व्यक्ति और राजनीति के लिए हितकर होगा।

सन्दर्भ सूची

1. पारख, जवरीमल्ल. (2006), *जनसंचार माध्यमों का राजनीतिक चरित्र,* प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 29।
2. पारख, जवरीमल्ल. (2006), *जनसंचार माध्यमों का राजनीतिक चरित्र,* प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 33।
3. लाइव हिंदुस्तान टीम, 23 जनवरी 2015, राहुल भास्कर दुमका, झारखण्ड।
4. drishtiias.com, 20 july 2022

****